International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.959 Volume 9, Issue 10, Oct 2022
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

भारतीय राजनीति में युवाओं का योगदान

श्री रतन लाल
सहायक आचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय प्रतापगढ़ राजस्थान

सारांश

यूवा शक्ति देश और समाज की रीढ़ हड्डी होती है युवा आधुनिक भारतीय समाज की ऊर्जा, उत्साह और नवाचार का प्रतीक हैं। वे देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और राष्ट्रीय नीतियों का नवीनीकरण और संवर्धन में अहम योगदान प्रदान करते हैं। युवा देश और समाज को नए शिखर पर ले जाते हैं। युवा देश का वर्तमान हैं, तो भूतकाल और भविष्य के सेतु भी हैं। युवा देश और समाज के जीवन मूल्यों के प्रतीक हैं। युवा गहन ऊर्जा और उच्च महत्वकांक्षाओं से भरे हुए होते हैं। उनकी आंखों में भविष्य के इंद्रधनुषी स्वप्न होते हैं। समाज को बेहतर बनाने और राष्ट्र के निर्माण में सर्वाधिक योगदान युवाओं का ही होता है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में युवाओं ने अपनी शक्ति का परिचय दिया था।

इस अध्ययन में भारतीय युवाओं के राजनीतिक प्रेरणा, उनके संघर्षों और सफलताओं की गहराई से जांच की जाएगी। यह अध्ययन युवाओं के राजनीतिक समर्थन, नेतृत्व, और शासन क्षमता के प्रति उनके विश्वास को भी परिक्षण करेगा। समापन रूप में, यह अध्ययन भारतीय राजनीति में युवाओं के योगदान की महत्वपूण भूमिका को समझने में मदद करेगा और उनके संवेदनशीलता और सामाजिक सचेतनता के महत्व को प्रोत्साहित करेगा। इससे भारतीय युवा समुदाय को राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया जा सकता है, जो राष्ट्रीय उत्थान और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है।

प्रस्तावना

भारत एक विकासशील और बड़ी जनसंख्या वाला देश है। यहां आधी जनसंख्या युवाओं की है। देश की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या की आयु 35 वर्ष से कम है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश है। यहां के लगभग 60 करोड़ लोग 25 से 30 वर्ष के हैं। यह स्थिति वर्ष 2045 तक बनी रहेगी। विश्व की लगभग आधी जनसंख्या 25 वर्ष से कम आयु की है। अपनी बड़ी युवा जनसंख्या के साथ भारत अर्थव्यवस्था नई ऊंचाई पर जा सकता है। परंतु इस ओर भी ध्यान देना होगा कि

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

आज देश की बडो जनसंख्या बेरोजगारी से जूझ रही है। भारतीय संख्यिकी विभाग द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार देश में बेरोजगारों की संख्या लगातार बढ़ रही है। देश में बेरोजगारों की संख्या 11.3 करोड़ से अधिक है। 15 से 60 वर्ष आयु के 74.8 करोड़ लोग बेरोजगार हैं, जो काम करने वाले लोगों की संख्या का 15 प्रतिशत है। जनगणना में बेरोजगारों को श्रेणीबद्ध करके गृहणियों, छात्रों और अन्य में शामिल किया गया है। यह अब तक बेरोजगारों की सबसे बड़ी संख्या है। वर्ष 2001 की जनगणना में जहां 23 प्रतिशत लोग बेरोजगार थे, वहीं 2011 की जनगणना में इनकी संख्या बढ़कर 28 प्रतिशत हो गई। बेरोजगार युवा हताश हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में युवा शक्ति का अनुचित उपयोग किया जा सकता है। हताश युवा अपराध के मार्ग पर चल पड़ते हैं। वे नशाखोरी के शिकार हो जाते हैं और फिर अपनी नशे की लत को पूरा करने के लिए अपराध भी कर बैठते हैं। इस तरह वे अपना जीवन नष्ट कर लेते हैं। देश में हो रही 70 प्रतिशत आपराधिक गतिविधियों में युवाओं की संलिप्तता रहती है।

देखने में आ रहा है कि युवाओं में नकारात्मकता जन्म ले रही है. उनमें धैर्य की कमी है। वे हर वस्तु अति शीघ्र प्राप्त कर लेना चाहते हैं। वे आगे बढ़ने के लिए कठिन परिश्रम की बजाय शोर्टकट्स खोजते हैं। भोग विलास और आधुनिकता की चकाचौंध उन्हें प्रभावित करती है। उच्च पद, धन–दौलत और ऐश्वर्य का जीवन उनका आदर्श बन गए हैं। अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करन में जब वे असफल हो जाते हैं, तो उनमें चिड़चिड़ापन आ जाता है। कई बार वे मानसिक तनाव का भी शिकार हो जाते हैं। युवाओं की इस नकारत्मकता को सकारत्मकता में परिवर्तित करना होगा।

यदि युवाओं को कोई उपयुक्त कार्य नहीं दिया गया, तब मानव संसाधनों का भारी राष्ट्रीय क्षय होगा. उन्हें किसी सकारात्मक कार्य में भागीदार बनाया जाना चाहिए। यदि इस मानव शक्ति की क्रियाशीलता को देश की विकास परियोजनाओं में प्रयुक्त किया जाए, तो यह अद्‌भुत कार्य कर सकती है। जब भी किसी चुनौती का सामना करने के लिए देश के युवाओं को पुकारा गया, तो वे पीछे नहीं रहे। प्राकृतिक आपदाओं के समय युवा आगे बढ़कर अपना योगदान देते हैं, चाहे भूकंप हो या बाढ़. युवाओं ने सदैव पीड़ितों की सहायता में दिन–रात परिश्रम किया।

भारतीय राजनीति में युवा नेतृत्व के प्रमुख कारण

1. **ताजा परिप्रेक्ष्य** :– युवा नेता राजनीतिक क्षेत्र में नए विचार और नया दृष्टिकोण लाते हैं जो देश में बदलाव और प्रगति लाने के लिए आवश्यक है।
2. **युवाओं का प्रतिनिधित्व** :– भारत एक युवा देश है इसकी आबादी का एक बड़ा हिस्सा 35 वर्ष से कम उम्र का है। ऐसे युवा नेताओं का होना जरूरी है जो आबादी के बड़े हिस्से के हितों का प्रभावी ढंग से प्रतिनिधित्व कर सके।
3. **डिजिटल प्रेमी** :– युवा तकनीक प्रेमी है और डिजिटल उपकरणों से अच्छी तरह वाकिफ है, जो राजनीतिक प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और नागरिकों के लिए सुलभ बनाने में मदद कर सकते हैं।

4. **ऊर्जा और उत्साह** :– युवा नेता राजनीति में ऊर्जा और उत्साह लाते हैं जो दूसरों को राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित और प्रेषित कर सकते हैं साथ में नवीन दिशा भी दे सकते हैं।
5. **समग्रता** :– युवा नेताओं द्वारा राजनीति में विविध और समावेशी दृष्टिकोण लाने की अधिक संभावना है। वह ऐसी नीतियों को बढ़ावा देते हैं जो उम्र, लिंग, जात–पात, सामाजिक और आर्थिक आदि स्थिति की परवाह किए बिना आबादी के सभी वर्गों को लाभ पहुंचती है।

युवाछात्र और राजनीति

छात्र की जीवन–वृत्ति इस पर निर्भर करती है कि वह विद्यालय में क्या पढ़ता है। छात्र अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चयन करते हैं। जो राजनीतिज्ञ बनना चाहते हैं, वे शुरू से ही राजनीति में रुचि लेते हैं। वे विद्यालय एवं महाविद्यालय के चुनावों में हिस्सा लेते हैं। छात्र और राजनीति का संबंध बहुत पुराना रहा है।

संसार का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी किसी राष्ट्र में क्रांति का बिगुल बजा, तो वहाँ के छात्र द्रष्टा मात्र नहीं रहे, अपितु उन्होंने क्रांति के बागडोर संभाली। परतंत्रता काल में स्वातंर्त्य के लिए और वर्तमान काल में भ्रष्टाचारी सरकारों के उन्मूलन के लिए भारत में छात्र शक्ति ने अग्रसर होकर क्रांति का आह्वान किया। इंडोनेशिया और ईरान में छात्रों ने सरकार का तख्ता ही उलट दिया था। यूनान की शासन नीति में परिवर्तन का श्रेय छात्र वर्ग को ही है। बंगलादेश को अस्तित्व में लाने में ढाका विश्वविद्यालय के छात्रों का योगदान भुलाया नहीं जा सकता। असम के मुख्यमंत्री तो विद्यार्थी रहते ही मुख्यमंत्री बने थे।

राजस्थान में छात्र राजनीति से मुख्य राजनीति में आए नेता :–

छात्रसंघ चुनावों को राजनीति की पहली पाठशाला कहा जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि देश के कई बड़े दिग्गज नेता छात्रसंघ चुनाव के जरिए ही राजनीति की मुख्यधारा में आए हैं। न केवल विधायक और मंत्री बल्कि सांसद से लेकर लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था के प्रमुख तक बने। राजस्थान में ऐसे दर्जनों नेता हैं जो छात्र राजनीति से निकल कर आगे आए हैं। लोकसभा चुनाव 2024 में भी कई प्रत्याशी ऐसे हैं जो छात्र राजनीति से निकल कर आगे आए हैं। पूर्व सीएम अशोक गहलोत की भाषा में इसे ***रगड़ाई*** कहा जाए तो भी कोई गलत नहीं है, आइये जानते हैं राजनीति के ऐसे महारथियों के बारे में...

ओम बिरला

कोटा लोकसभा क्षेत्र से भाजपा के प्रत्याशी ओम बिरला ने अपनी राजनैतिक जीवन की शुरुआत छात्र जीवन से की। वर्ष 1979 में वे राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल गुमानपुरा में छात्रसंघ अध्यक्ष बने थे। कॉलेज के दिनों में राजस्थान कॉलेज और कॉमर्स कोटा के सचिव चुने गए थे। छात्र राजनीति से निकलकर बाद में वे कोटा दक्षिण विधानसभा सीट से लगातार तीन बार विधायक बने। वर्ष 2014 और 2019 में लगातार दो बार सांसद चुने गए। 2019 में उन्हें लोकसभा अध्यक्ष बनने का अवसर मिला।

गजेंद्र सिंह शेखावत

जोधपुर लोकसभा सीट से भाजपा के प्रत्याशी गजेंद्र सिंह शेखावत ने भी अपनी राजनीति की शुरुआत छात्र जीवन से की। वे जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के छात्रसंघ अध्यक्ष रह चुके हैं। बाद में भाजपा से जुड़कर राजनीति की मुख्यधारा में आ गए। वर्ष 2014 में वे जोधपुर लोकसभा सीट से पहली बार सांसद बने। 2019 में उन्हें दूसरी बार सांसद बनने का मौका मिला। केंद्र की मोदी सरकार में गजेंद्र सिंह शेखावत को मंत्री बनने का भी अवसर मिला।

हनुमान बेनीवाल

नागौर लोकसभा सीट से राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के उम्मीदवार हनुमान बेनीवाल ने अपनी राजनीति की शुरुआत छात्र राजनीति से की। वे वर्ष 1997–98 में राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष चुनाव गए। बाद में मूंडवा विधानसभा सीट से विधायक बने। परिसीमन के बाद वे खींवसर विधानसभा सीट से लगातार तीन बार विधायक चुने गए। वर्ष 2019 में भारतीय जनता पार्टी ने हनुमान बेनीवाल की पार्टी के साथ गठबंधन किया था। वे नागौर से सांसद बनने में कामयाब रहे। इस बार के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के साथ गठबंधन करके बेनीवाल फिर से चुनाव मैदान में हैं।

प्रताप सिंह खाचरियावास

जयपुर लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी प्रताप सिंह खाचरियावास भी छात्र राजनीति से होकर निकले हैं। जयपुर से निकलते ही सीकर जिले की सीमा के पहले गांव खाचरियावास के रहने वाले प्रताप सिंह वर्ष 1992–93 में राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष रह चुके हैं। वे पूर्व उपराष्ट्रपति स्वर्गीय भैरोसिंह शेखावत के भतीजे हैं। पहले वे भाजपा में थे लेकिन भाजपा ने उन्हें चुनाव लड़ने का अवसर नहीं दिया तो वे बागी होकर विधानसभा चुनाव में कूद पड़े। पहले चुनाव में हार का सामना करना पड़ा लेकिन बाद में कांग्रेस में शामिल होकर दूसरा चुनाव लड़े और विधानसभा पहुंच गए। प्रताप सिंह गहलोत सरकार में कैबिनेट मंत्री भी रह चुके हैं।

ललित यादव

अलवर लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी ललित यादव भी राजस्थान विश्वविद्यालय से निकले हुए हैं। वर्ष 2012–13 में वे राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्रसंघ महासचिव चुन गए थे। इसके बाद वे अपने स्थानीय विधानसभा क्षेत्र से तैयारी करने लगे। नवंबर 2023 में हुए विधानसभा चुनाव में ललित यादव अलवर जिले की मुंडावर विधानसभा सीट से कांग्रेस के टिकट पर विधायक बने। अब वे लोकसभा चुनाव में अपना भाग्य आजमा रहे हैं।

अनिल चोपड़ा

जयपुर ग्रामीण लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी रहे अनिल चोपड़ा भी राजस्थान विश्वविद्यालय से निकल कर नेता बने हैं। वे वर्ष 2014–15 में राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। छात्र राजनीति से निकलते ही चोपड़ा ने सीधे जयपुर ग्रामीण सीट से लोकसभा चुनाव की तैयारी शुरू कर दी। उन्होंने विधानसभा चुनाव पर फोकस नहीं किया। उनकी मेहनत आर लोगों से जुड़ाव को देखते हुए कांग्रेस ने उन्हें लोकसभा चुनाव का टिकट दिया है।

रविंद्र सिंह भाटी

बाड़मेर जैसलमेर लोकसभा सीट से निर्दलीय चुनाव मैदान में कूदे रविंद्र सिंह भाटी एक चर्चित नाम है। पांच महीने पहले हुए विधानसभा चुनाव में भी रविंद्र भाटी निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में शिव विधानसभा से विधायक निर्वाचित हुए थे। भाटी वर्ष 2019 में जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के छात्रसंघ अध्यक्ष रह चुके हैं।

नेहासिंह गुर्जर

राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्रसंघ चुनाव में वर्ष 2012 में उपाध्यक्ष बनी नेहा गुर्जर भी लाकसभा चुनाव में कूद गई हैं। हालांकि उन्हें किसी राजनैतिक दल ने टिकट नहीं दिया लेकिन उन्होंने निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में जयपुर ग्रामीण लोकसभा सीट से नामांकन दाखिल किया है।

भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भूमिका

भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भूमि का सिर्फ राजनेता बनने तक ही सीमित नहीं है। यह सक्रिय राजनीति नागरिक बनने के बारे में भी है, जो अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों को जवाबदेह बनाते हैं। युवाओं ने विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन में अपनी क्षमता दिखाइए जिसे अन्ना हजारे के नेतृत्व में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन और ग्रेटाथनवर्ग की जलवायु सक्रियता। यह उदाहरण बताते हैं कि कैसे युवा सरकार से प्रदर्शित जवाबदेही और जवाबदेही की मांग करके परिवर्तन के शक्तिशाली एजेंट बन सकते हैं।

भारतीय राजनीति में युवाओं के सामने चुनौतियां

जबकि युवा में परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक बनने की क्षमता है उन्हें भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। सबसे महत्वपूर्ण बढ़ाओ में से एक पारंपरिक राजनीतिक का प्रचलन, जो अक्सर स्थापित नेटवर्क धन और पारिवारिक संबंधों पर निर्भर करती है। यह भारतीय राजनीति की एक सबसे बड़ी समस्या यूं कहें की गंदी परंपरा है। इस परंपरा की वजह से ओजस्वी और निर्माणकारी इच्छा शक्ति रखने वाले युवा पारिवारिक राजनीति के मुकाबले पीछे रह जाते हैं, उन्हें आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिल पाता। इसके अलावा राजनीति में धन और बाहुबल का प्रभाव युवाओं की राजनीतिक भागीदारी के लिए एक गंभीर चुनौती है। यह आदर्शवादी और सिद्धांत वादी युवाओं को भाग लेने से हतोत्साहित करता है।

क्योंकि उन्हें चुनावी राजनीति के गंदे पानी से गुजरना मुश्किल लगता है। एक और महत्वपूर्ण चुनौती राजनीतिक प्रक्रिया के बारे में जागरूकता और शिक्षा की कमी है, जो युवाओं को अपने अधिकारों, जिम्मेदारियां और शासन की जटिलताओं को समझने की क्षमता में बाधा डालती है। हालांकि नागरिक शिक्षा पर जागरूकता अभियानों के माध्यम से इस चुनौती का समाधान किया जा सकता है।

निष्कर्ष

इस लेख में प्रस्तुत किया गया विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किए गए कई उदाहरण यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय युवाओं का राजनीतिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है और आवश्यक पहलू भी। युवाओं की इच्छा शक्ति भारतीय राजनीति को एक नई दिशा और दशा दे सकते हैं। भारतीय युवाओ की नवाचार, उत्साह और समझदारी ने राजनीतिक प्रक्रिया में एक नई ऊर्जा पर दिशा प्रदान की है जिसमें कोई शक नहीं है। इस अध्ययन ने दिखाया है कि युवाओं की सक्रिय और समर्थ भागीदारी से राजनीतिक प्रक्रिया में सकारात्मक परिवर्तन और सुधार हो सकता है। युवाओं की सामाजिक सचेतना, राजनीतिक संज्ञान और नागरिक दायित्व के प्रति उनकी संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए यह आवश्यक है। इस अध्याय ने यह भी प्रमाणित किया है कि युवाओं के राजनीतिक समर्थन, नेतृत्व और शासन क्षमता में वृद्धि के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। अंत में यह अध्ययन भारतीय युवाओं के राजनीतिक योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने में मदद करेगा और उनकी सामाजिक संचेतना और सामाजिक सद्भाव के प्रति उनके दायित्व चलता को बढ़ावा देगा। इससे भारतीय युवा समुदाय को राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया जा सकता है, जो राष्ट्रीय उत्थान और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है।

संदर्भ

1. आचार्य, मंगेश । भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिका एक राजनीतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन। 2022.10.13140 आरजी .2.2.20441.80485।
2. पारख, दिशांत. (2020) चुनावो राजनीति में युवाओं का प्रतिनिधित्वरू भारतीय चुनाव प्रणालियों का एक विश्लेषण। जनरल ऑफ पॉलिटिक्स एंड गवर्नेंस. 8.43–59
3. बालेंद्र कुमार और डॉ. अरविंद कुमार International Journal of Political Science and Governance- IJPSG 2022;4(2): 155&161
4. समाचार पत्र दैनिक नवज्योति
5. भारतीय संख्यिकी विभाग
6. राजस्थान विधानसभा चुनाव, 2023

7 लोकसभा चुनाव 2024